राजयोग-बिंदु सिद्ध योग

ब्रह्माकुमारीझ

प्रस्तुति

ब्र. कु. प्रफुल्लचंद्र

राजयोग सर्वोच्च एवं सर्वोत्तम योग

क्योंकि उसमें सर्व योगो का समन्वय और संतुलन है|

ज्ञानयोग

कर्मयोग

भक्तियोग

सन्यासयोग

सम्यकयोग

राजयोग एक बिंदु सिद्ध योग भी है

क्योंकि.....

बिंदु बनना है...

बिंदु से जुटना है...

ड्रामा के हर सिन के बाद बिंदु लगाना है...

प्रकृति सहित सर्व को बिंदु रूप में देखना है...

बिदुओं की दुनिया से आये है...

बिंदु समान दुनिया पे आये है...

बिंदु बनाना है

बाबा का सबसे पहेला फरमान है की बच्चे देहभान से मुक्त होकर अपनी आत्मा की स्वस्मृति में एवं अपने बिंदु स्वरूप में स्थित हो जाओ | तुम्हारा समग्र अस्तित्व एवं व्यक्तित्व तुम आत्मा बिंदु में समाया हुआ है |

यही राजयोग के अभ्यास का प्रथम सोपान है एवं तुम्हारी सभी समस्याओं का समाधान है |

बिंदु से जुटाना है

बाबा का दूसरा फरमान है की अपनी बिंदुरूप स्वस्मृति एवं स्वस्थिति में स्थित हो कर मुज बिन्दुस्वरूप परमात्मा से विविध संबंध से जुट कर मुझे याद करो |

यही राजयोग का महत्वपूर्ण दूसरा सोपान है | इस अभ्यास से तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे, विकारों पर विजय पाओगे एवं दिव्यगुणों – दिव्यशक्तिओं से संपन्न बनोगे |

ड्रामा के हर सीन के बाद बिंदु लगाना है

बाबा हमें तीसरी महत्वपूर्ण बात यह बताते है की पुरुष, प्रकृति और परमात्मा के बिच खेला जा रहा यह चक्रीय विश्वनाटक अनादी अविनाशी है, जिस के हर चक्र में हरेक के पार्ट का हुबहू पुनरावर्तन होता है | हर आत्मा हर चक्रमे अपना निश्चित पार्ट बजाती है |

इसीलिए ड्रामा के हर सिन को, अच्छा वा बुरा, साक्षी भाव से देखना है और अपसेट हुए बिना फुल स्टॉप – बिंदु लगाना है |

प्रकृति सहित सर्व को बिंदु रूप में देखना है

हर चेतन और जड़ का अस्तित्व बिंदु रूप में है| हर योनी की पारभौतिक चेतना प्रकाश बिंदु के रूप में है| हर भौतिक पदार्थ एव भौतिक शक्ति अति सुक्ष्म पार्टिकल के रूप में है |

जो कुछ भी साकरी, आकरी एवं निराकारी रूप में दिखाई देता है वा अनुभव होता है वो सब बिंदु रूप में है |

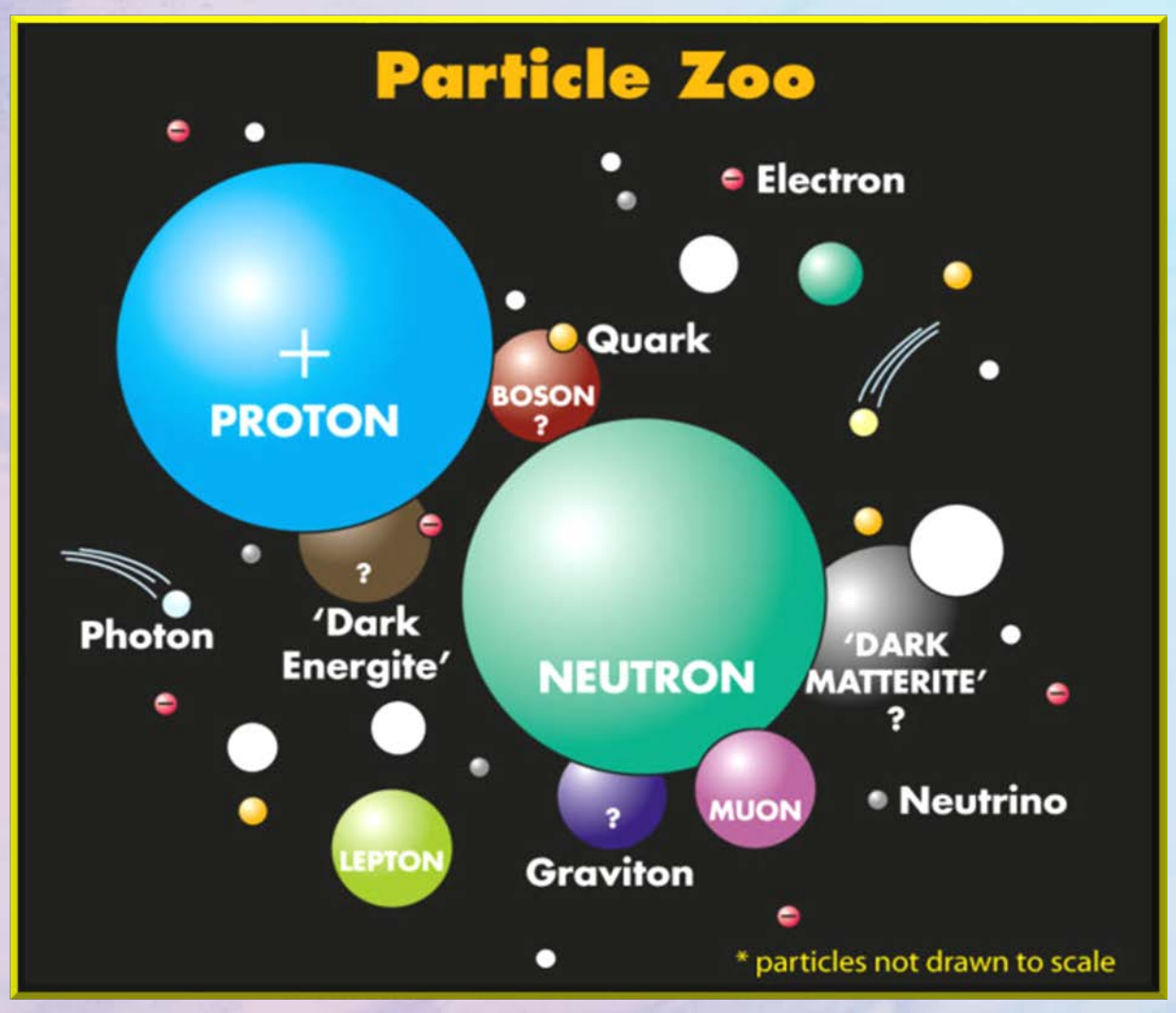

बिदुओं की दुनिया से आये है...

बिंदुरूप चेतन आत्माओं का मूल निवास्थान परमधाम है, जहां से हम अपना पार्ट बजाने इस साकार पृथ्वी लोक पर आये है |

बिंदु समान दुनिया पे आये है

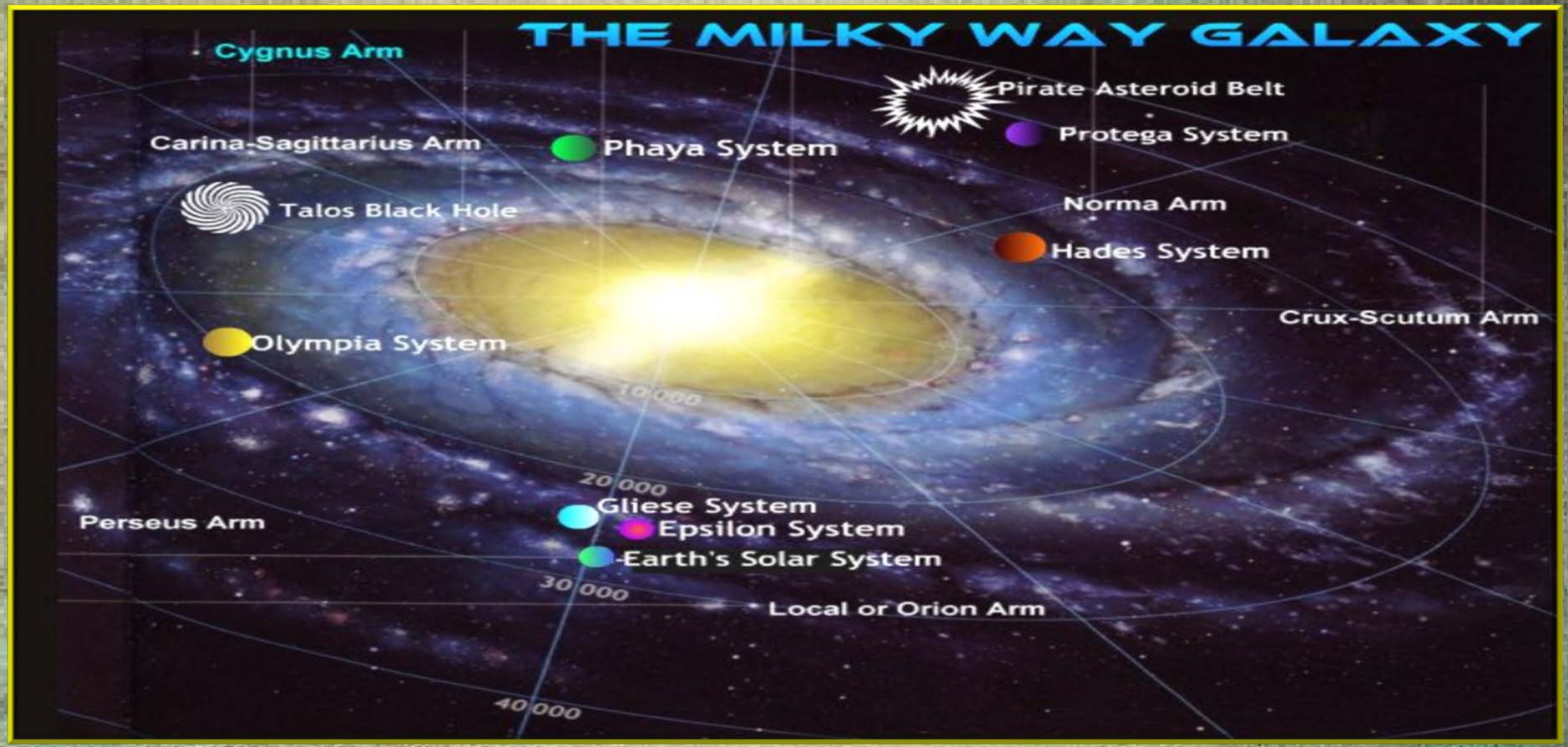

धन्यवाद

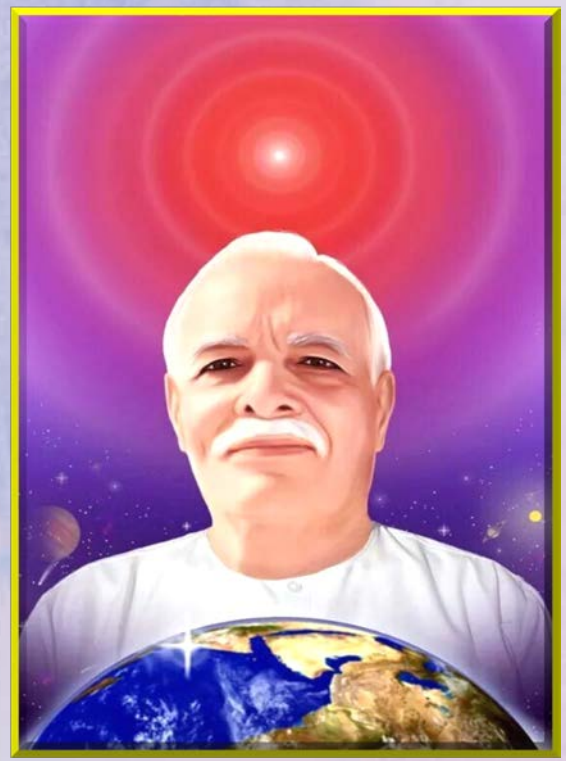

ॐ शांति